परमेश्वर सदैव अपनी प्रतिज्ञाओं का पालन करता है :

पुराने नियम की ऐतिहासिक पुस्तकें

(बच्चों के शिक्षक अध्ययनमाला न0 एच 3 बी पढ़ें)

1. ऐतिहासिक पुस्तकें पढ़ाने के लिये प्रार्थना व वचन द्वारा अच्छी तैयारी कीजिये :

प्रार्थना: "हे प्रभु परमेश्वर, आप सदाकाल से अपनी प्रजा के प्रति विश्वासयोग्य रहे हैं। ऐसा होने दीजिये कि मैं और मेरा झुण्ड आज आप पर भरोसा करना सीखें और हमारे बाद हमारी सन्तानें भी आप पर भरोसा करती रहें।" आमीन।

नीचे दी गई तालिका में दर्शाया गया है कि प्रभु यीशु मसीह से कितने वर्ष पूर्व उस पुस्तक में घटना घटी। प्रत्येक पुस्तक में मुख्य जाना-पहचाना पद पढ़ें और देखें कि नया नियम में सभी ऐतिहासिक पुस्तकों का संकेत पाया जाता है।

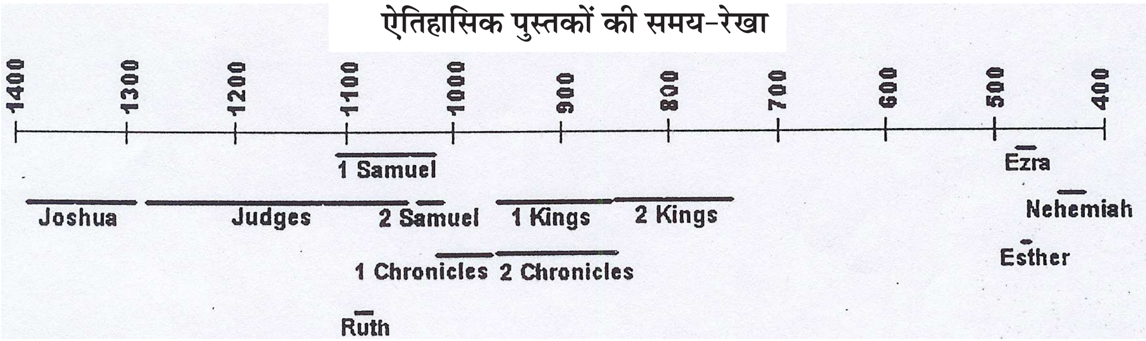

1400-1383 ई0 पू0 : कनान विजय करने के बाद यहोशु ने इस्राएलजाति का नेतृत्व किया (देखें यहो 1:7)। जब उन्होंने पूर्णरूप से परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन किया केवल तभी उन्हें विजय प्राप्त हुई। इब्रानियों 11:31 में ज्ञात कीजिये कि नये नियम में राहाब से लेकर यहोशु तक का वृतान्त क्या बताता है। (यहो 6:22-25)।

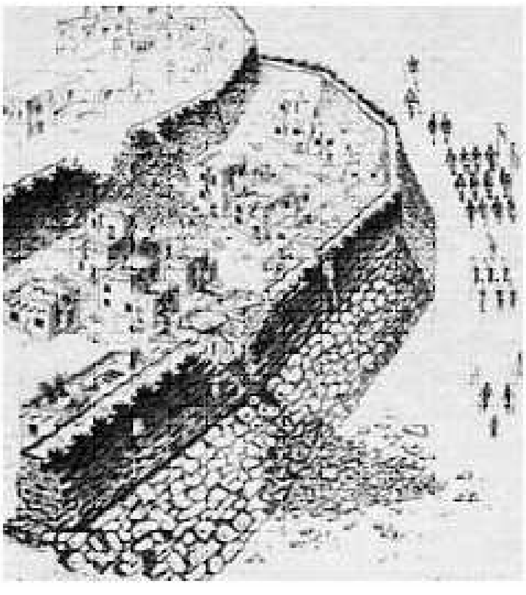

The walls of Jericho start to crumble. See Joshua 6:15-20

सन् 1386–1045 ई0पू0: इस्राएल के 300 वर्षो के आज्ञाउल्लंघन काल में न्यायी लोग स्थानीय अगुवे, नेता और छुड़ाने वाले रहे। (देखें न्या0 17:6, 18:1)। न्यायियों 14:5–6 में शिमशोन के वर्णन से आगे इब्रानियों 11:32–33 में ज्ञात करें कि क्या लिखा है।

सन् 1100 ई0पू0: (रूत की पुस्तक) रूत एक विदेशी स्त्री थी जिसने इस्राएल के परमेश्वर पर विश्वास किया, बोअज़ से उसने विवाह किया, और वह राजा दाऊद तथा मसीह यीशु की पूर्वज बनी। (देखें रूत 1:6)। मत्ती 1:5 में बोअज़ और रूत का वर्णन पाया जाता है।

सन् 1100–1010 : (1 शमूएल की पुस्तक) इस पुस्तक में शमूएल नबी के नेतृत्व, प्रथम राजा शाऊल के राज्यकाल एवं उसके पतन तथा दाऊद राजा के उदय का लेखाजोखा है। (देखें 15:22)। 1 शमूएल 13:14 में दाऊद के विषय परमेश्वर के वचन प्रेरितों के काम 13:22 में देखें।

सन् 1010–970 ई0पू0 : (2 शमूएल की पुस्तक) : इस पुस्तक में राजा दाऊद की विजयों, उसके पाप, उसकी असफलताओं तथा उसकी राजनैतिक उल्लंघ का वर्णन पाया जाता है। (देखें 2 शमूएल 7:9), 2 शमूएल 7:8,14 में जो प्रतिज्ञा परमेश्वर ने दाऊद व उसकी सन्तानों से की थी, वह हम मसीहीयों पर भी लागू होती है जैसाकि 2 कुरिन्थियों 6:18 में कहा गया है।

सन् 1011–970 ई0पू0 : (1 इतिहास) : इस पुस्तक में राजा दाऊद के शासनकाल का वृतान्त पाया जाता है,(देखें 1 इतिहास 4:10) जो वाचा 1 इतिहास 17:11 व 13 में परमेश्वर ने दाऊद से बांधी थी उसे हम इब्रानियों 1:5 में प्रभु यीशु पर लागू होते देखते हैं।

सन् 970–538 ई0पू0 : (2 इतिहास) : इस पुस्तक में इस्राएल और यहूदा के राजाओं का वृतान्त है जो सुलैमान के राज्याभिषेक से आरम्भ होकर, यहूदा राज्य के पतन होने, तथा फारस के राजा कुस्रू के 538 ई0पू0 में येरूशलेम के मन्दिर के पुन: निर्माण की आज्ञा दिये जाने तक का वर्णन करता है (देखें 2 इतिहास 13:10)। साथ ही पढ़ें मत्ती 23:35 में यीशु के शब्द जो उन्होंने 2 इतिहास 24:20 व 21 से लेकर स्मरण किए।

सन् 970–853 ई0पू0 : (1 राजा) : इस पुस्तक में राजा सुलैमान के राज्यकाल, इस्राएल का दो भागों में अर्थात् उत्तरी राज्य इस्राएल और दक्षिणी राज्य यहूदा में विभक्त हो जाने का तथा एलियाह भविष्यवक्ता के जीवन चरित्रका वर्णन पाया जाता है। (देखें 1 राजा 3:9)। साथ ही 1 राजा 19:10,14,18 का उदाहरण रोमियों 11:3–4 में देखें।

सन् 853–561 ई0पू0 : (2 राजा) : इस पुस्तक में एलीशा भविष्यवक्ता का जीवनचरित्र तथा इस्राएल और यहूदा राज्यों के दुष्ट व धर्मी राजाओं का वर्णन पाया जाता है। (देखें 2 राजा 19:15)। इस्राएल राज्य की जनता लगभग 722 में अश्शूर के दासत्व में तथा यहूदा राज्य की जनता लगभग 561 ई0पू0 में बाबेल के दासत्व में ले जाई गई। लूका 4:27 में एक अश्शूरी का वर्णन आया है जिसने एलीशा की आज्ञापालन करके चंगाई पाई जैसाकि 2 राजा 5:1–27 में वर्णित किया गया है।

सन् 538–516 तथा 458–457 ई0पू0 : (एज्रा नामक पुस्तक) : इस पुस्तक में प्रतिज्ञानुसार, येरूबाबेल के नेतृत्व में प्रथम दल का यहूदा देश में बन्धुआई से वापस लौटने का तथा दूसरे दल का एज्रा के नेतृत्व में वापस लौटने का वर्णन किया गया है।(देखें एज्रा 3:11)। लूका 21:24 में पढ़ें कि किस प्रकार प्रभु यीशु ने एज्रा के 9:7 शब्दों को लेकर अविश्वास के कारण होने वाले दंड के विषय में बताया।

सन् 483–473 ई0पू0 : (एस्तर की पुस्तक) :इस पुस्तक में बताया जाता है कि किस प्रकार बाबेल के राजा की यहूदी पत्नी रानी एस्तर अपने लोगों के बचाव के लिये राजा से विनती करती है जो बन्धुवे थे और जिन्हें शत्रुओं द्वारा घात करने का षड़यन्त्र रचा जा रहा था। (देखें एस्तेर 4:14)। मत्ती 6:23 में बताया जाता है कि किस प्रकार मूर्ख राजा हेरोदेस ने एस्तेर 5:3,6 में लिखित वचनों का प्रयोग किया।

सन् 444–425 ई0पू0 : (नहेम्याह की पुस्तक) : इस पुस्तक में नहेम्याह की अगुवाई में बाबेल के राजा अर्तक्ष की आज्ञानुसार एक दल का बन्धुआई से येरूशलेम लौटने का वर्णन पाया जाता है ताकि वे लोग अपने नगर का

दुबारा निर्माण कर सकें। (देखें नहेम्याह 8:10)। यूहन्ना 6:31 में देखें कि यीशु ने स्वयं पर नहेम्याह 9:15 के शब्दों को लागू किया।

2. आगामी सप्ताह के लिये अपने सहयोगियों के साथ गतिविधियों की योजना बनाएं:

प्रशिक्षण लेने वाले प्रार्थियों की बाइबल की ऐतिहासिक पुस्तकों के नाम तथा उनके मुख्य विषय याद करने में उनकी सहायता कीजिये।

ऐतिहासिक पुस्तकों में बाइबल के मुख्य पात्रों जैसे: यहोशु, रूत, गिदोन, शमशोन, दाऊद, शमूएल, एलियाह, एलिशा, व नहेम्याह आदि सहित अन्य मुख्य पात्रों की खोज कीजिये। जब आप अपने झुण्ड के सदस्यों से भेंट करने उनके घरों पर जाते हैं तो इन पात्रों के जीवन-चरित्र के विषय बताएं।

3. अपने सहयोगियों के साथ आने वाली आराधना-सभा की योजना बनाएं।

भाग-2 में जिन कहानियों की आपने तैयारी की है उनमें से कोई एक लेकर पुन: नाटक प्रस्तुत कीजिये।

बच्चों ने जो तैयारी की है, उसे प्रस्तुत करने का अवसर दीजिये।

प्रभु-भोज विधि मनाने के लिये 1 शमूएल 15:22 पढ़ें। समझाएं कि पुराने नियम में पाए जाने वाले पशु-बलिदान, प्रभु यीशु मसीह के बलिदान को दर्शाते हैं, यदि लोग बिना विश्वास और पश्चात्तापी हृदय के, प्रभु भोज में मात्र एक धार्मिक विधि मनाने के उद्देश्य से संभागी होते हैं तो इसका कोई महत्व नहीं है।

बीमारों के लिये, आसपास के लोगों के लिये जिन्हें ख्रीस्त की आवश्यकता है तथा कलिसिया के अगुवों के लिये प्रार्थना करने के लिये दो या तीन जनों के छोटे समूह बनाएं।

याद करें : यहोशु 1:7

न्यायियों के काल में, न्यायियों की पुस्तक में वर्णित घटनाएं व न्यायी का नाम	वर्ष
इस्राएली लोग कुशत्रिशातैम के अधीन रहे। 3:7-8	8
ओत्नीएल द्वारा छुड़ाए जाने के बाद देश में शान्ति, 3:7-11	40
इस्राएल मोआब के दासत्व में रहा। 3:12	18
यहूदा द्वारा छुड़ाए जाने के बाद शान्ति। 3:12-30	80
शमगर ने पलिश्तियों के दासत्व से इस्राएल को छुड़ाया- 3:31	1
इस्राएली कनान के दासत्व में - 4:1-3	20
दबोरा-बाराक द्वारा छुड़ाए जाने के बाद शान्ति - 4:1-5:3	40
इस्राएल का राजा अबिमेलेक - 9:1-57	3
तोला का जीवन-चरित्र - 10:1-2	23
याईर का जीवन-चरित्र - 10:3-5	22
इस्राएल अम्मोनीयों व पलिश्तियों की दासता में- 10:8-10	18
हित्ती का जीवन चरित्र - 10-8-12:7	6
इबसान का जीवन चरित्र - 12:8-10	7
एलोन का जीवन चरित्र - 12:11-12	10
अब्दोन का जीवन चरित्र - 12:13-15	8
इस्राएल पलिश्तियों की दासता में - 13:1	40
शिमशोन का जीवन चरित्र - 13:1-16:31	20